जो सब से श्रेष्ठ हैं। इतना ही नहीं, वे सम्पूर्ण विश्व के **निवास** अर्थात् आश्रय हैं। अर्जुन का उद्गार है कि सम्पूर्ण सिद्ध-समुदाय और देववृन्द के लिए उनका जयजयकार करना योग्य ही है, क्योंकि उनसे महान् दूसरा कोई नहीं है। यह विशेष रूप से कहा गया है कि श्रीकृष्ण ब्रह्मा से भी महान् हैं, क्योंकि उसका जन्म उन्हीं से हुआ है। गर्भोदकशायी विष्णु श्रीकृष्ण के अंश है। इन्हीं गर्भोदकशायी विष्णु की नाभि से विकसित कमल पर ब्रह्मा का प्रादुर्भाव होता है। अतः उचित है कि ब्रह्मा और उससे जन्मे शिव आदि सब देवता श्रीकृष्ण का अभिवादन करें। **अक्षरम्** शब्द महत्त्वपूर्ण है; अभिप्राय यह है कि श्रीभगवान् इस अनित्य जगत् से परे हैं। वे सब कारणों के कारण हैं और इसलिए इस प्रकृति में बँधे जीवों से और प्राकृत सृष्टि से भी श्रेष्ठ हैं। श्रीभगवान् वस्तुतः परमोच्च महिमामय हैं।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।।३८।।

त्वम्=आप; **आदिदेवः**=स्वयं भगवान् ; **पुरुषः**=पुरुष; **पुराणः**=सनातन; **त्वम्**=आप; **अस्य**=इस; **विश्वस्य**=विश्व के; **परम्**=एकमात्र, **निधानम्**=आश्रय; **वेत्ता**=जानने वाले; **असि**=आप हैं; **वेद्यम् च**=जानने योग्य; **परम् च**=अलौकिक; **धाम**=आश्रय; **त्वया**=आपके द्वारा; **ततम्**=व्याप्त है; **विश्वम्**=ब्रह्माण्ड; **अनन्तरूप**=हे अनन्तरूप।

अनुवाद

प्रभो ! आप आदिदेव और सनातन पुरुष हैं, आप ही इस प्राकृत-जगत् के एकमात्र आश्रय हैं। आप सब कुछ जानते हैं और जो कुछ जानने योग्य है, वह भी आप ही हैं। हे अनन्तरूप ! यह सम्पूर्ण सृष्टि आप से व्याप्त है।।३८।।

तात्पर्य

सम्पूर्ण सृष्टि श्रीभगवान् के आश्रय में स्थित है; अतएव वे ही परमाश्रय हैं। **निधानम्** का अर्थ है कि ब्रह्मज्योति सहित सब कुछ भगवान् श्रीकृष्ण पर आश्रित है। इस संसार में घटित होने वाली प्रत्येक घटना का उन्हें ज्ञान है और वे ही सम्पूर्ण ज्ञान के लक्ष्य हैं। अतः उन्हें **वेत्ता** और **वेद्य** कहा गया है। सर्वव्यापक होने के रूप में वे वेद्य (जानने योग्य) हैं; परमधाम के कारण होने से गुणातीत हैं तथा वे ही वैकुण्ठ-जगत् में प्रधानपुरुष हैं।

Imp

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।३९।।

वायुः=वायु; **यमः**=यमराज; **अग्निः**=अग्नि; **वरुणः**=जल का देवता; **शशांकः**